

वॉश तकनीक की कलात्मक प्रासंगिकता एवं सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्यांकन

नीरज कुमार मौर्या

शोधार्थी

टी.जी.टी. ड्राइंग

राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय,

शास्त्री पार्क, दिल्ली-53

डॉ० किरण प्रदीप

शोध निर्देशिका

प्रोफेसर एवं प्राचार्या

कनोहर लाल स्नातकोत्तर

महिला महाविद्यालय,

मेरठ,

Reference to this paper should
be made as follows:

Received: 10-05-26

Approved: 29-06-26

नीरज कुमार मौर्या

डॉ० किरण प्रदीप

वॉश तकनीक की कलात्मक
प्रासंगिकता एवं सौन्दर्यशास्त्रीय
मूल्यांकन

Vol. XVII, Sp. Issue July.2026
Article No.01, Pg. 001-003

Similarity Check: 08%

Online available at
<https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-klsmm-mrt-july-2026>

DOI: <https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI07.001>

सारांश

आधुनिक कला जगत के इतिहास में वॉश तकनीक केवल एक कला परंपरा या माध्यम नहीं है बल्कि यह आधुनिक भारतीय कला की रीढ़ है जिसने उस समय अधियारों में गोते खाती प्राचीन भारतीय कलाओं को भंवर से बाहर निकाला और उस समय के कलाकारों को एक विशुद्ध भारतीय कला परंपरा से परिचित कराया। नहीं तो उस समय की जो व्यवस्था थी उसके अनुसार सभी कलाकार पाश्चात्य कलाओं का अनुसरण करने को विवश थे। इस भाग दौड़ भरे युग में भी वॉश तकनीक की कोमलता, भावों की अभिव्यक्ति, रंगों का संयोजन जैसे गुण इसको अन्य सभी कला शैलियों से पृथक और विशिष्ट बनाती है। वॉश तकनीक से हमें सीखने को मिलता है कि कला केवल रंग लगाने का ही काम नहीं है बल्कि रंगों को बहाकर उनके भीतर की आत्मा को कागज पर उतारने का नाम है।

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of JGV.*

आज के युग का मानव भाग-दौड़ भरी जिंदगी का हिस्सा है। वह किसी प्रकार से अपने जीवन के साथ एक सामंजस्य बैठाने के प्रयास में लगा हुआ है जिससे उसके जीवन में खुशहाली और प्रेम भरा रहे। प्राचीन काल से ही मानव ने अपने जीवन में अथाह मेहनत की है जिससे प्रकृति और मानव के बीच एक सामंजस्य बैठाया है। इसके साथ ही कला जगत में भी बहुत सारे बदलाव आए हैं प्रतिदिन नए आयाम कलाओं में नजर आते हैं और नई-नई तकनीक हमारे समक्ष प्रस्तुत हो रही है परंतु फिर भी वॉश तकनीक के बारे में यदि हम बात करते हैं तो यह अपने कलात्मक गुणों (कोमलता और पारदर्शिता) के कारण बहुत ही विशिष्ट बन गई है आज के जीवन में वॉश तकनीक जो सौंदर्य शास्त्रीय और कलात्मक प्रासंगिकता है, उसको हम निम्न प्रकार से देख सकते हैं।

परिचय और इतिहास

यदि आधुनिक युग में हम भारतीय चित्रकला के इतिहास को देखते हैं तो वॉश तकनीक या धावन पद्धति केवल रंग लगाने का एक माध्यम नहीं है बल्कि यह औपनिवेशिक दासता के खिलाफ भारतीय अस्मिता और स्वदेशी चेतना को कला के माध्यम से अभिव्यक्त करने का एक सशक्त और समृद्ध आंदोलन रहा है। वॉश तकनीक का उद्भव 20वीं शताब्दी की शुरुआत में हुआ था जब ब्रिटिश अकादमी की यथार्थवादी शैली का प्रभाव पूरे भारतीय कला जगत पर जोर शोर से हावी हो रहा था और अधिकतर कलाकार इस पश्चिमी शैली का अनुसरण करने लगे थे। तभी अवनींद्रनाथ टैगोर ने ब्रिटिश अकादमी शैली के विरुद्ध एक कला आंदोलन शुरू किया जिसको आज हम वॉश शैली या बंगाल शैली के नाम से जानते हैं। वॉश तकनीक की खोज कोई सुलभ कार्य नहीं था इसकी खोज का कारण उस समय की कंपनी शैली के यथार्थवादी विदेशी एजेंडे के विरुद्ध एक वैचारिक युद्ध था। अवनी बाबू के द्वारा उनकी कला कौशलता और भारतीय प्राचीन कलाओं का विस्तृत अध्ययन इस शैली के उद्भव में अत्यंत सहयोगी रहे। सन् 1903 में जब कुछ प्रसिद्ध जापानी कलाकार हिशीदा, या कोहामा, ताइक्वान आदि भारत भ्रमण के लिए आए थे तो उसी समय अवनी बाबू ने उन कलाकारों से ही जापानी वॉश तकनीक को सीखा था। इसके पश्चात अवनींद्रनाथ ने भारतीय चित्रकला (मुगल राजस्थानी तथा अजंता) के मिश्रण से एक नई शैली को जन्म दिया जिसको आज भारतीय कला जगत में 'वॉश शैली या बंगाल शैली' के नाम से जाना जाता है।

वॉश तकनीक में कार्य करना बहुत ही कठिन कार्य है इसमें कलाकार को बहुत ही धैर्य और कठिन परिश्रम की आवश्यकता होती है क्योंकि उसको सर्वप्रथम रेखांकन करना पड़ता है उसके पश्चात रंगों का भरना बहुत ही साधना एवं धैर्य का कार्य है। इसमें कागज पर जल रंग की पतली-पतली और पारदर्शी परतें लगाई जाती हैं जिससे कि इसमें एक अनूठा प्रभाव हमें देखने को मिलता है। रंगों को भरकर फिर उसको पानी से धोना और फिर रंग भरना, फिर उसको पानी से धोना और सुखाना। उसके बाद फिर वही प्रक्रिया दोहराना मैं समझता हूं कि बहुत ही जटिल कार्य हो जाता है। इस प्रक्रिया को कई बार दोहराया जाता है, कभी-कभी तो लगभग 15 से 20 बार तक भी इस पद्धति को दोहराया जाता है जिसके फल स्वरूप चित्र में एक अद्भुत कोमलता और पारदर्शिता आ जाती है।

कलात्मक एवं सौंदर्य शास्त्रीय दृष्टिकोण

आज के आधुनिक युग में कला एवं मानव जीवन में निरंतर बदलाव देखे जा रहे हैं और यह प्रक्रिया निरंतर चल रही है, परंतु फिर भी वॉश शैली का इस युग में तकनीकी महत्व कम नहीं हुआ है जिसको हम निम्न बिंदुओं से समझ सकते हैं।

आध्यात्मिक एवं काव्यात्मक वातावरण

वॉश तकनीक में बार-बार धोने से रंगों का जो तीखापन या चटकपन होता है वह कम हो जाता है, बल्कि हम यह भी कह सकते हैं कि वह एक तरह से समाप्त ही हो जाता है और इसके पश्चात जो धुंधला, शांत और रहस्यमय प्रभाव उत्पन्न होता है वह भारतीय दर्शन के आध्यात्मिक और ध्यानमग्न भाव को दर्शाने के लिए सबसे उपयुक्त माध्यम बन जाता है। इसके कारण कलाकृति के अंदर एक दैवीय, अलौकिक और मधुर वातावरण देखने को मिलता है। वॉश

तकनीक में रंगों का धीमा या हल्कापन और उनकी पारदर्शिता ही इसके विशेष गुण होते हैं जिससे उसमें एक काव्यात्मक रहस्यमय वातावरण का सृजन कलाकार के द्वारा हो जाता है।

भावों की सरलता और कोमलता

उस समय जब भारतीय कलाकार अपनी गौरवमय और प्राचीन कला को छोड़कर पाश्चात्य कला के यथार्थवादी और भाव शून्यता कि ओर आकर्षित हो रहे थे वहीं वॉश तकनीक ने मानवीय संवेदनाओं, विरह, करुणा और प्रकृति के प्रति सूक्ष्म अनुराग को जिंदा रखा और मृतप्राय भारतीय प्राचीन काल को एक नया जीवन प्रदान किया।

वॉश तकनीक को भारत के बहुत से कलाकारों ने आत्मसात किया और इसका अनुसरण करते हुए अपनी कलाकृतियों का निर्माण किया है। अवनींद्रनाथ टैगोर के बाद भी इस शैली में कार्य होता रहा है इसके प्रमुख कलाकारों में नंदलाल बोस, असित कुमार हलदर, क्षितिंद्रनाथ मजूमदार आदि मुख्य कलाकार रहे हैं। परंतु वॉश तकनीक का चलन इन कलाकारों तक सीमित नहीं रहा बल्कि भारत के विभिन्न राज्यों के कलाकारों ने इसको आत्मसात किया। जिसमें उत्तर प्रदेश के बी. एन. आर्य, राजेंद्र प्रसाद, डॉक्टर श्याम बिहारी अग्रवाल एवं डॉक्टर जगदीश वर्मा जैसे कलाकारों ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया है। डॉक्टर जगदीश वर्मा ने पश्चिम उत्तर प्रदेश में रहकर वॉश तकनीक में बहुत ही अधिक कार्य किया है जिसके माध्यम से उन्होंने विभिन्न विषयों को अपने चित्रों में दर्शाया है। उनके चित्र इतने सुंदर और रहस्यमय बन पड़े हैं मानो एक अलग ही आध्यात्मिक वातावरण उसमें दिखाई देने लगा है। इनके वॉश चित्रों में “बारहमासा, प्रतीक्षारत स्त्री, मजार, गंगावतरण, दी सॉल” आदि प्रसिद्ध चित्र देखने को मिलते हैं। ‘मजार’ नामक चित्र में जो अलौकिक प्रकाश दिखाई देता है वही इस चित्र की एक विशेषता बन गया है। डॉ० वर्मा मजार पेंटिंग को अपनी प्रिय पेंटिंग मानते थे। उन्होंने बारह महीनों के चित्रण के साथ ही साथ राग रागिनीयों के सुंदर चित्रों का सृजन भी किया है।

समकालीन चित्रकारों के समक्ष चुनौतियां

वॉश तकनीक में कलाकारों को जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है वह धैर्य और एकाग्रता ही हो सकती है क्योंकि आज का युग कंप्यूटर और डिजिटल वस्तुओं का युग है सभी को अपने कार्य को जल्दी करने की होड़ सी लगी हुई है। आज किसी भी कलाकार के पास इतना समय और धैर्य नहीं कि वह अपने कार्य को पूरा करने में कुछ प्रतीक्षा कर सके। इसलिए आज कल बहुत ही कम चित्रकार इस माध्यम को अपना रहे हैं। इसका कारण वॉश तकनीक में कार्य करने में लगने वाला समय है। यह एक लंबे समय तक चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें एक सप्ताह से लेकर महीने तक का समय चाहिए होता है। परंतु आज कल किसी के अंदर इतना धैर्य कहां मिलता है। क्योंकि सभी को फटाफट अपना काम चाहिए होता है।

बाजार में सामग्री की उपलब्धता

आज के समय में सबसे बड़ी चुनौती यह भी है कि बाजार में वॉश तकनीक के जो सामग्री है उसकी उपलब्धता बहुत ही दुर्भर हो गई है क्योंकि अच्छी गुणवत्ता वाले कैंट पेपर और अच्छा सेबल हेयर ब्रश की उपलब्धता बहुत कम और कठिन हो गई है। आज केवल कुछ स्थान ही ऐसे हैं जहां पर वॉश तकनीक से संबंधित सामग्री उपलब्ध है। “विश्वभारती शांतिनिकेतन और लखनऊ कला महाविद्यालय ऐसे संस्थान हैं जहां पर आज भी वॉश तकनीक में काम हो रहा है तथा वहां के कलाकार आज भी वॉश तकनीक में कार्य कर रहे हैं।”

संदर्भ

1. अग्रवाल डॉ गिराज किशोर – आधुनिक भारतीय चित्रकला, संजय पब्लिकेशन
2. अग्रवाल आर०ए० – कला विलास भारतीय चित्रकला का विवेचन इंटरनेशनल पब्लिकेशन हाउस मेरठ
3. प्रताप रीता – भारतीय चित्रकला एवं मूर्ति कला का इतिहास राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर
4. लुथेरा सी०के०, लुथेरा आर०सी० – भारतीय चित्रकला का संलग्न विशाल पब्लिशिंग कंपनी जालंधर – दिल्ली